(क) छापाखाना - छापाखाना के आविष्कार का उतना ही महत्त्व है जितना आदि मानव द्वारा आग, पहिया और लिपि का। छापाखाना के आविष्कार ने पूरे विश्व की सोच में क्रांतिकारी बदलाव ला दिया।

(ख) गुटेनवर्ग - गुटेनवर्ग जर्मनी का रहनेवाला था। छापाखाना का आविष्कारक गुटेनवर्ग को ही माना जाता है। उसने अपने आविष्कार के द्वारा पूरे विश्व की सोच में क्रांतिकारी बदलाव लाकर रख दिया।

(ग) बाइबिल - बाइबिल ईसाईयों का धार्मिक ग्रंथ है। गुटेनवर्ग ने जब प्रेस बनाकर छपाई का प्रयोग किया तो उन्होंने सबसे पहले बाइबिल को ही छापा।

(घ) रेशम मार्ग - चीन से रेशम का निर्यात यूरोप तक के देशों में होता था। इसके निर्यात वाले मार्ग को 'रेशम मार्ग' कहा जाता था।

(ङ) मराठा - 'मराठा' उग्र विचारों को व्यक्त करने वाला एक राष्ट्रवादी समाचार पत्र था। इसके सम्पादक बाल गंगाधर तिलक थे।

(च) यंग इण्डिया - अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित 'यंग इण्डिया' एक देशभक्ति पूर्ण राष्ट्रवादी समाचार पत्र था। इसके संस्थापक तथा सम्पादक गाँधी जी थे।

(छ) वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट - वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट 1878 में लागू हुआ था। यह एक्ट केवल भारतीय भाषाओं में प्रकाशित समाचार पत्रों पर लागू होता था

(ज) सर सैयद अहमद - सर सैयद अहमद ईस्ट इण्डिया कम्पनी में एक किरानी थे। जो अंग्रेजों के इशारे पर हिन्दू - मुस्लिम एकता को तोड़ने का काम करते थे।

(झ) प्रोटेस्टेन्ट वाद - पोप और पादरियों के चरित्र में आई गिरावट के कारण ईसाई धर्म दो खेमों में बँट गया। मूल खेमा कैथोलिक कहलाया और इसका प्रोटेस्ट करने वाला खेमा प्रोटेस्टेन्ट कहलाया।

(ञ) मार्टिन लूथर - मार्टिन लूथर जर्मनी का एक धर्म सुधारक था। यह पोप और पादरियों के चरित्र में आए गिरावट से नाराज था, जिस कारण उसे धर्म सुधार आन्दोलन चलाना पड़ा।

गुटेनबर्ग ने मुद्रणयंत्र का विकास कैसे किया ?

गुटेनवर्ग ने कृषक जमीदार व्यापारी परिवार में जन्म लिया था इसलिए वह बचपन से ही तेल और जैतून पेरने वाली मशीनों से परिचित था। गुटेनबर्ग ने अपने ज्ञान एवं अनुभव से टुकड़ों में बिखरी मुद्रण कला के ऐतिहासिक शोध को संगठित एवं एकत्रित किया तथा टाइप के लिए पंच मेट्रिक्स, मोल्ड आदि बनाने पर योजनाबद्ध तरीके से कार्य आरंभ किया। उसने टाईप के लिए तीन चार धातुओं का मिश्रण बना, टाईप बनाए। पहले अक्षरों के मोल्ड बनाया और उन मोल्डों के सहारे टाईप की ढलाई की गई। अंग्रेजी में चूँकि अक्षरों की संख्या बहुत कम है, अतः टाईप बनाना आसान हो गया। फिर उसने छपाई योग्य स्याही भी बना ली।

छापाखाना यूरोप में कैसे पहुँचा ?

मुद्रण क्रांति का श्रेय चीन को जाता है। कहा जाता है कि छापाखाना को यूरोप पहुँचाने वाला मार्कोंपोलो था, जो अपनी यात्रा के क्रम में चीन पहुँचा था। लेकिन उसके पहले ही व्यापारियों द्वारा रेशम मार्ग से छापाखाना यूरोप पहँच चुका था। वहाँ छापाखाना का उपयोग ताश और धार्मिक चित्र बनाने में करते थे। लेकिन मार्कोंपोलो ने छापाखाने के साथ ही लकड़ी के टाईप भी भेजे। जर्मनी में कागज का आविष्कार 1336 में हो गया। इसके बाद तो छपाई का काम तेजी से बढ़ने लगा, क्योंकि छापाखाने की मशीन गुटेनवर्ग ने पहले ही बना ली थी।

इन्क्वीजीशन से आप क्या समझते हैं ? इसकी जरूरत क्यों पड़ी ?

'इन्क्वीजीशन' एक प्रकार का न्यायालय था जिसका काम धर्म विरोधियों की पहचान कर दंडित करना था।

मुद्रण संस्कृति ने चर्च के भ्रष्ट तंत्र का पर्दाफाश किया। पोप से लेकर गांव के पादरी तक का जीवन कितना भ्रष्ट था यह किसी से छिपा नहीं रह गया। ईसाई धर्म और बाइबिल पर नए ढंग से चिंतन मनन और विश्लेषण आरंभ हुआ। लिहाजा रोमन कैथोलिक चर्च इससे क्रुद्ध हो गया और धर्म विरोधी विचारों को दबाने के लिए इन्क्वीजीशन नामक संस्था को गठित किया।

पाण्डुलिपि क्या है इसकी क्या उपयोगिता है?

पाण्डुलिपि भोजपत्र एवं ताड़ पत्रों और बाद में हस्तनिर्मित कागजो पर हस्तलिखित लेखन है। भारत में संस्कृत, पाली, प्राकृत, अरबी, फारसी और विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में असंख्य पाण्डुलिपियाँ तैयार की गई। जब मुद्रण यंत्र की सुविधा नहीं थी तब विश्व में अकेला देश भारत ही था, जहां अत्यंत स्थाई पुस्तकें लिखी गई। रामायण, महाभारत, पुराण, उपनिषद् आदि पांडुलिपियाँ ही थी, जो बाद में पुस्तक के रूप में मुद्रित की गई। पाण्डुलिपियों की उपयोगिता आज भी है। इसके माध्यम से हम तत्कालीन साहित्यिक और भाषा शैली तथा सामाजिक चरित्र के साथ धर्म, कला, विज्ञान, तकनीक और राजनीतिक संकल्पनाओं से भी परिचित होते हैं। आज भी विभिन्न पुस्तकालयों में इसे धरोहर के रूप में सुरक्षित रखा गया है।

लार्ड लिटन ने राष्ट्रीय आन्दोलन को गतिमान बनाया। कैसे ?

लार्ड लिटन ने समाचार-पत्र अधिनियम का कानून लाकर भारतीय समाचार पत्रों की भाषा और भाव को नियंत्रित करने में सफल रहा। इस कानून के आने से सभी राष्ट्रवादी एकजुट होकर इसके खिलाफ होने लगे। राष्ट्रवादियों के एकजुटता से राष्ट्रीय आन्दोलन और भी मजबूत और गतिमान हो गया।

मुद्रण क्रांति ने आधुनिक विश्व को कैसे प्रभावित किया ?

मुद्रण क्रांति का तात्पर्य केवल किताबों का नया और विकसित होने से नहीं था, बल्कि इसने मानवीय जिंदगी को पूरी तरह से परिवर्तित कर दिया। छापखाने का आविष्कार महज तकनीकी दृष्टि से नाटकीय बदलाव की शुरुआत नहीं थी। पुस्तक उत्पादन के नए तरीकों ने समाज एवं राष्ट्र की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक मूल्यों तथा शक्तियों को सहज स्वाभाविक और निष्पक्ष रुप से दृष्टि प्रदान किया।

मुद्रण क्रांति ने आधुनिक विश्व को अनेक प्रकार से प्रभावित किया। मुद्रण संस्कृति ने धर्म को भी प्रभावित किया। उसी समय यूरोप में धर्मसुधार आन्दोलन चल रहा था। मुद्रण की सुविधा प्राप्त होते ही उसमें और भी तेजी आ गई। बाइबिल के संस्करण पर संस्करण प्रकाशित होने लगे। इसको खरीदने और पढ़ने वालों की संख्या बढ़ने लगी। छपाई के काम से नये बौद्धिक, माहौल का निर्माण हुआ एवं धर्म सुधार आन्दोलन के नए विचारों का फैलाव तेजी से हुआ और वह आम जन तक आसानी से पहुँचने लगा। मुद्रण कला की तकनीकी विकास भी तेजी से हुआ। अब बिजली से चलने वाले बेलनाकार मशीनें भी बाजार में आ गई। यहाँ तक कि ऑफसेट में बहुरंगी छपाई भी होने लगी। अब प्रेस केवल धर्म प्रचार का ही साधनं नहीं रहा, बल्कि इसके द्वारा ज्ञान - विज्ञान तथा विचारों का फैलाव भी तेजी से हुआ। भारत में तो मुद्रणं क्रांति ने राजनीति को पूरी तरह से बदल दिया। राष्ट्रीय आन्दोलन को फैलाने में बहुत मदद मिली। देश में अनेक राष्ट्रवादी अखबार छपने लगे। पाठकों की संख्या भी बढ़ने लगी। राष्ट्रवादी नेता अपने विचार अखबारों के माध्यम से जन - जन तक पहुँचाने लगे।

19वीं सदी में भारत में प्रेस के विकास को रेखांकित करें।

19वीं सदी में भारत में समाचारपत्रों के उदय ने राष्ट्रीय आंदोलन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह न सिर्फ विचारों को तेजी से फैलाने वाला अनिवार्य शैक्षणिक स्रोत बन गया, बल्कि ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध भारतीयों की भावना को एक रूप देने, उनकी नीतियों, उनके शोषण के विरुद्ध जागृति लाने एवं देश प्रेम की भावना भरकर राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला एक महत्वपूर्ण जरिया बन गया।

गंगाधर भट्टाचार्य ने साप्ताहिक बंगाल गजट निकाला तो 1818 में ब्रिटिश व्यापारियों ने कलकत्ता जर्नल निकाला। इस पत्र के सम्पादक बकिंघम ने पत्रकारिता के माध्यम से प्रेस को जनता तक पहुँचा दिया। इसने प्रेस को आचोलनात्मक दृष्टिकोण अपनाने, जाँच पड़ताल करके समाचार देने तथा नेतृत्व प्रदान करने की ओर प्रेरित किया। इस कारण नाराज होकर इस्ट इण्डिया कम्पनी ने इन्हें इंग्लैंड भेज दिया। 1821 में बंगला भाषा में संवाद कौमुदी' तथा 1822 में फारसी भाषा में 'मिरातुला' अखबार निकला। इसके साथ ही प्रगतिशील राष्ट्रवादी प्रकृति के समाचार पत्रों का तांता लग गया। इन दोनों पत्रों के सम्पादक बंगाल के विद्वान राजा राममोहन राय थे। इन्होंने अखबारों को सामाजिक तथा धार्मिक सुधार आन्दोलनी का हथियार बना दिया। 1822 में बम्बई से गुजराती भाषा में 'दैनिक बम्बई' समाचारपत्र निकला तो 1831 में 'जामें जमशेद', 1851 में 'गोफ्तार' तथा 'अखवारे सौदागर' का प्रकाशन हुआ।

भारत में दो प्रकार के प्रेस थे : एक एंग्लो इण्डियन तथा दूसरा भारतीय प्रेस। एंग्लो इण्डियन प्रेस में पत्र छापते थे, वे 'फूट डालो और शासन करो' के तर्ज पर थे, जबकि भारतीय प्रेस मेल - मिलाप और राष्ट्रीयता से ओत - प्रोत होते थे।

भारतीय प्रेस की विशेषताओं को लिखें।

समाचार पत्रों को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के समय प्रचार के हथियार के रूप में खूब प्रयोग किया गया। महात्मा गाँधी केवल राजनीतिज्ञ ही नहीं थे, बल्कि एक कुशल पत्रकार भी थे। इन्होंने यंग इण्डिया तथा हरिजन पत्रों के माध्यम से अपने विचारों एवं राष्ट्रवादी आन्दोलन का प्रचार - प्रसार किया। भारतीय प्रेस गाँधीजी के वक्तव्यों और व्यक्तित्व से निर्भीक बनने लगे। मोतीलाल नेहरू ने 1919 में 'इंडिपेंडेस', शिव प्रसाद गुप्ता ने 'आज', के . एम . पन्निकर ने 1922 में हिन्दुस्तान टाइम्स का सम्पादन किया। बाद में हिन्दुस्तान टाइम्स का सम्पादन कार्य मदन मोहन मालवीय के हाथ में आ गया। बाद में घनश्याम दास बिड़ला ने इस पत्र को खरीद लिया। मद्रास में 'स्वराज' तथा 'गुजरात' में नवजीवन का प्रकाशन शुरू हुआ। 1910 - 20 के बीच उर्दू पत्रकारिता का भी खूब विकास हुआ। मौलाना आजाद के सम्पादन में 1912 में 'अलहिलाल' तथा 1913 में 'अल बिलाग' का प्रकाशन हुआ। मोहम्मद अली ने अग्रेजी में 'कामरेड' तथा उर्दू में 'हमदर्द' का प्रकाशन किया। 1910 में गणेशंकर विद्यार्थी ने कानपुर से 'प्रताप' का प्रकाशन शुरू किया। यह पत्र राष्ट्रवाद तथा किसान - मजदूरों का जबरदस्त समर्थक था।

राष्ट्रीय आन्दोलन को भारतीय प्रेसों ने कैसे प्रभावित किया ?

भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के सभी पक्षों, चाहे वह राजनीति हो चाहे सामाजिक हो, या चाहे आर्थिक हो, प्रेस ने प्रत्यक्ष रूप से सबको प्रभावित किया। राष्ट्रीय नेताओं ने प्रेस के माध्यम से ही अंग्रेजी राज की शोषणकारी नीतियों का पर्दाफाश किया। इस क्रम में उन्होंने देश में जागृति फैलाने का भी काम किया। विदेशी सत्ता से त्रस्त जनता को सन्मार्ग दिखाने एवं साम्राज्यवाद के विरोध में निडर होकर स्वर उठाने का साहस प्रेसों के माध्यम से ही प्राप्त हुआ। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रारंभ से पहले समाचार पत्र ही देश में लोकमत का निर्माण भी करते थे और प्रतिनिधित्व भी करते थे। देश भक्तों ने लाभ या व्यापारिक उद्देश्य से पत्रकारिता को नहीं अपनाया, बल्कि इसे मिशन के रूप में अपनाया। उन्होंने समाचारपत्रों में राजनीतिक शिक्षा देने का भी काम किया। अधिकतर समाचारपत्रों का रूख कांग्रेस की याचनावादी नीतियों से भिन्न थी। ये गरमदल का प्रतिनिधित्व करते थे और उन्हीं के स्वर को उजागर करते थे। फिरंगियों द्वारा हो रहे भारत के आर्थिक शोषण को इन्होंने ही उजागार किया और करते रहे। देश की आर्थिक दुर्दशा का चित्रण भी प्रेस या समाचार पत्र ही करते थे। 'भारत मित्र' नामक समाचार पत्र ने भारत से चावल के निर्यात का विरोध किया। अधिकांश समाचार पत्रों का कहना था कि भारत की वास्तविक समस्या राजनीति से बढ़कर आर्थिक है। गाँवों में कृषकों तथा दस्तकारों की हालत अत्यंत सोचनीय थी। वे हमेशा कर्ज के बोझ तले दबे रहते थे। सामाजिक सुधार के क्षेत्र में प्रेसों ने सामाजिक रुढ़ियों, रीति - रिवाजों अंधविश्वासों तथा अंग्रेजी सभ्यता के कुप्रभाव को लेकर आलोचनात्मक लेख प्रकाशित करते रहे।

मुद्रण यंत्र की विकास यात्रा को रेखांकित कीजिए। यह आधुनिक रूप में कैसे पहुँचा ?

आज विश्व ने जो प्रगति की है, उसकी जड़ में प्रेस - संस्कृति ही रही है। यदि मुद्रण यंत्र का विकास नहीं हुआ रहता तो आज न तो वैज्ञानिक पुस्तकें उपलब्ध हो पाती और न ही विज्ञान की उन्नति हो पाती। प्रेस - संस्कृति को आज की स्थिति में पहुँचाने के लिए लोगो ने बहुत मेहनत की है। ताड़पत्रों पर हाथ से लिखने के बाद कागज पर लिखकर पुस्तकें तैयार होने लगी। कागज का आविष्कार चीन में हुआ लेकिन मुद्रण का शुरुआत यूरोप में हुआ। चीनी बौद्ध प्रचारको ने जापान में मुद्रण कला को पहुँचाया तो वहीं यूरोप में मार्कोपोलो ने। जर्मनी में गुटेनबर्ग ने पहली मुद्रण मशीन बनाई। जर्मनी से ये पूरे यूरोप और बाद में भारत तथा अन्य देशों में पहुँच गयीं। पहले तो धार्मिक पुस्तके ही छपी, बाद में आधुनिक विद्वानों के विचार छपने लगे। इससे समाज के दबे - कुचले दलित वर्ग में चेतना का संचार हुआ। मुद्रण संस्कृति ने राजाओं की मनमानी के विरुद्ध भी जनता को जागृत किया। चर्च और राजाओं ने मुद्रण संस्कृति का विरोध तो किया लेकिन वे इसमें सफल नहीं हुए। प्रेस - संस्कृति से कारखानों के कामगारों में भी चेतना का विकास हुआ। वे मालिकों से अपने लिए सुविधाओं की मांग मनवाने में समर्थ हुए। भारत में भी प्रेस - संस्कृति पर लगाम कसने का प्रयास हुआ। मुद्रण संस्कृति ने भारत में धार्मिक सुधार आन्दोलनों को बल दिया। अब मुद्रण में विविधता आने लगी थी। पुस्तकों के तथ्यों को सिद्ध करने के लिए चित्रों की सहायता ली जाने लगी। मुद्रण संस्कृति के विकास से भारतीय महिलाएँ भी शिक्षा की ओर उन्मुख हुई। गरीब जनता ने भी मुद्रण संस्कृति का लाभ उठाया।